

अमरनाथ फ्लैश फ्लड

प्रलमिस के लयि:

फ्लैश फ्लड, क्लाउड बर्स्टिंग, फंडामेंटल्स ऑफ फज़िकल जयिग्राफी, इंडयिन फजिकल जयिग्राफी, डजिस्टर मैनेजमेंट बॉडीज़, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ

मेन्स के लयि:

फ्लैश फ्लड और क्लाउड बर्स्टिंग के लयि भौगोलकि कारक, आपदा प्रबंधन नकियाय और उनकी भूमकि, भौतकि भूगोल के मूल तत्त्व, भारतीय भौतकि भूगोल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य कश्मीर के गांदरबल इलाके में बालटाल आधार शविरि के पास [फ्लैश फ्लड](#) के कारण भूस्खलन हुआ ।

- इस घटना में 13 तीर्थयात्री मारे गए हैं और दर्जनों लापता हैं ।

अमरनाथ के बारे में:

- अमरनाथ भारत के जम्मू और कश्मीर में स्थति एक हद्वि मंदरि है ।
- यह गुफा 3,888 मीटर की ऊँचाई पर स्थति है, शरीनगर से लगभग 100 कमी दूर जो जम्मू और कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी है, यहाँ पहलगाम शहर के माध्यम से पहुँचा जा सकता है ।
- मंदरि हद्वि धर्म के एक महत्त्वपूरण हसिसे का प्रतनिधित्व करता है ।
- अमरनाथ यात्रा इस बार तीन वर्ष बाद फरि से शुरु हुई ।
- वार्षकि यात्रा में गुफा मंदरि तक पहुँचने के लयि दक्षणि में पहलगाम और मध्य कश्मीर में सोनमर्ग के दो मार्ग हैं ।



अमरनाथ फ्लैश फ्लड:

■ फ्लैश फ्लड:

- इसमें आमतौर पर बारिश के दौरान या उसके बाद जल स्तर में अचानक वृद्धि होती है।
- ये बहुत ऊँची चोटी के साथ छोटी अवधि की अत्यधिक स्थानीयकृत घटनाएँ हैं और आमतौर पर वर्षा और चरम बाढ़ की घटना के बीच छह घंटे से भी कम समय होता है।
- पानी के प्राकृतिक प्रवाह में बाधा डालने वाली जल निकासी लाइनों या अतिक्रमणों की उपस्थिति में बाढ़ की स्थिति और खराब हो जाती है।

■ कारण:

- यह घटना भारी बारिश की वजह से तेज़ आँधी, तूफान, उष्णकटिबंधीय तूफान, बर्फ का पघिलना आदिके कारण हो सकती है।
- फ्लैश फ्लड की घटना बाँध टूटने और/या मलबा प्रवाह के कारण भी हो सकती है।
- ज्वालामुखियों पर या उसके आस-पास के क्षेत्रों में वसिफोट के बाद अचानक बाढ़ भी आई है, जब भीषण गर्मी से ग्लेशियर पघिल जाते हैं।
- वर्षा की तीव्रता, वर्षा का स्थान और वितरण, भूमि उपयोग तथा स्थलाकृति, वनस्पति के प्रकार एवं वकिसा/घनत्व, मृदा का प्रकार, मृदा, जल- सामग्री सभी यह निर्धारित करते हैं कि फ्लैश फ्लड कि कतिनी जल्दी हो सकती है और यह कहाँ प्रभावित करती है।

बादल फटना:

■ परिचय:

- बादल फटना एक छोटे से क्षेत्र में छोटी अवधि की तीव्र वर्षा की घटना है।
- यह लगभग 20-30 वर्ग कमी. के भौगोलिक क्षेत्र में 100 ममी./घंटा से अधिक अपरत्याशति वर्षा के साथ एक मौसमी घटना है।
- भारतीय उपमहाद्वीप में आमतौर पर यह घटना तब घटित होती है जब मानसून उत्तर की ओर, बंगाल की खाड़ी या अरब सागर से मैदानी इलाकों में और फरि हिमालय की ओर बढ़ता है जो कभी-कभी प्रतिघंटे 75 मिलीमीटर वर्षा करता है।

■ घटना:

- सापेक्षिक आर्द्रता और मेघ आवरण, नमिन तापमान एवं धीमी हवाओं के साथ अधिकतम स्तर पर होता है, जिसके कारण बादल बहुत अधिक मात्रा में तीव्र गति से संघनित होते हैं और इसके परिणामस्वरूप बादल फट सकते हैं।
- जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, वातावरण अधिक-से-अधिक नमी धारण कर सकता है और यह नमी कम अवधि में बहुत तीव्र वर्षा (शायद आधे घंटे या एक घंटे के लिये) का कारण बनती है, जिसके परिणामस्वरूप पहाड़ी क्षेत्रों में अचानक बाढ़ आती है और शहरों में शहरी बाढ़ की स्थिति देखी जाती है।

■ बादल फटना और वर्षण:

- वर्षण बादल से गरिने वाला संघनित जल है, जबकि बादल फटना (Cloudburst) अचानक भारी वर्षण है।
- प्रतिघंटे 100 ममी से अधिक वर्षण को बादल फटने के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- बादल फटना प्राकृतिक घटना है, लेकिन यह काफी अपरत्याशति रूप से अचानक और बाद के रूप में उत्पन्न होती है।

■ बादल फटने का परिणाम:

- फ्लैशफ्लड
- भूस्खलन
- कीचड़ प्रवाह (Mudflows)
- भूमिगुहा (Land caving)

अमरनाथ जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में बादल फटने की घटना:

- पहाड़ी क्षेत्रों में कभी-कभी संतृप्त बादल संघनित हो जाते हैं लेकिन ऊपर की ओर वायु के बहुत गर्म प्रवाह के कारण बारिश नहीं कर पाते हैं।
 - वर्षा की बूंदों को नीचे की ओर गरिने की बजाय वायु प्रवाह द्वारा ऊपर की ओर ले जाया जाता है। जिससे नई बूँदें बनती हैं और मौजूदा वर्षा की बूँदों का आकार बढ़ जाता है।
 - एक बट्टि के बाद बारिश की बूँदें इतनी भारी हो जाती हैं कि बादल ऊपर टिके नहीं रह पाते और वे एक साथ त्वरित रूप से नीचे गरि जाते हैं।
- वर्ष 2020 में प्रकाशति एक अध्ययन ने केदारनाथ क्षेत्र में बादल फटने के पीछे के मौसम संबंधी कारकों की जाँच की, जहाँ बादल फटने से वर्ष 2013 की वनिाशकारी बाढ़ में आई।
 - इसमें पाया गया कि बादल फटने के दौरान कम तापमान और धीमी हवाओं के साथ सापेक्षिक आर्द्रता एवं बादलों का आवरण अधिकतम स्तर पर था।

स्रोत: द हट्टि

